

- डॉ. गुलाब कोठारी

जब व्यक्ति स्वयं अपने जीवन का मोल नहीं समझता, उसको बनाए रखने के प्रयास नहीं करता, तब दुनिया में कौन दूसरा उसके लिए चिन्तित होगा? जीवन—मूल्यों का कार्य जीवन का मूल्य बनाए रखना है।

आज व्यक्ति सुबह से शाम तक इतना व्यस्त प्रतीत होता है कि उसे कहीं रुककर यह सोचने का समय भी नहीं है कि उसका रास्ता उसके लिए आगे जाकर सही निकलेगा या नहीं। मार्ग भटक जाने पर रुक कर किसी राहगीर से पूछा भी जाता है लेकिन आज पूछना भी अपने आप में एक शर्म की बात लगती है।

मुझे किसी ने खाने पर बुलाया और मैं चला गया। किसी ने सिनेमा देखने की बात छोड़ी और मैंने हाँ भर दी। टीवी चलाया और बटन दबाते—दबाते 15—20 मिनट लगा दिए। गप्पें मारने बैठे तो घड़ी देखना ही भूल गए। पन्द्रह मिनट मिलने को गए और दो घंटे लग गए। इससे यह स्पष्ट है कि हमें हमारे समय की कीमत का भी एहसास नहीं है। हम कहते हैं जवानी बार—बार नहीं आती। जीवन का मकखन कहते हैं इसको। जो कुछ इस उम्र में बोते हैं, उसी का फल पूरी उम्र में खाते हैं। इसका तो एक—एक पल कीमती है। और, हम घंटों लगा देते हैं ऐसे कामों में जहाँ इसकी कीमत ही नहीं रहती।

टी.वी. तो चला दिया, किन्तु यह पता नहीं है कि देखना क्या चाहते हैं। दुकान में घुस गए, यह नहीं मालूम कि क्या खरीदना है। दोस्तों में बैठ गए, विषय का अनुमान ही नहीं है। आवश्यक और अनावश्यक के बीच कोई भेद—रेखा ही नहीं है। अच्छे और बुरे की कोई परिभाषा हमें याद नहीं है। लाभ—हानि की अवधारणा यहाँ लागू ही नहीं होती। जैसे, एक व्यापारी दो लाख बचाने में लगा रहता है और 200 करोड़ की लागत पर उसकी आँख ही नहीं जाती।

हमने जवानी को मनोरंजन बना दिया। अवकाश की अवधारणा से जोड़ दिया। यह काल तो तपने का है। निखरने का है। उफान होना चाहिए। शिखर छूने से कम कुछ सोचना ही क्यों चाहिए? सर्वश्रेष्ठ काल को सर्वश्रेष्ठ उपयोग में लेना चाहिए। यदि यह जागरूकता नहीं है तो सही बुद्धि का अभाव है। पशु की तरह शरीर में ही उलझकर रह जाएँगे। शिखर के बजाए तलहटी में ही जीवन कट जाएगा।

जिस प्रकार बिना भूख लगे खाने से कष्ट हो जाता है, उसी प्रकार प्रसन्न मन को रंजन में लगा देने का भी अच्छा परिणाम नहीं आता। मन भटक जाता है, प्रमादी हो जाता है। जब मन दुःखी हो, बोझ से दबा हो, अवसादग्रस्त या थका हो, तभी मनोरंजन की आवश्यकता होती है। आज जिस प्रकार रंजन हो रहा है वह तो मन तक पहुँचता ही नहीं। तब, क्या हम शरीर का रंजन करते हैं?

आज मनोरंजन के नाम पर एक छटपटाहट देखी जा सकती है। जिस स्तर का मनोरंजन होने लगा है उससे तो जीवन का मूल्य ही घट रहा है दूसरी ओर हम अच्छे कैरियर के सपने भी देखते हैं दोनों में संतुलन कहाँ दिखाई पड़ता है?

शायद सारा मनोरंजन जीवन के महत्व को कम करने वाला रह गया है। हमें चिन्तनशील विषय पढ़ने—देखने में अच्छे लगते ही नहीं जो संगीत मन को गहराइयों को छूता है, वह हमारे काम का ही नहीं। सिनेमा, फ़ैशन आदि ऐसे विषय नहीं हैं कि जिन पर घंटों चर्चा की जाए। अखबार मैगजीनों का चटपटापन जीवन में प्रतिदिन मानस को दूषित करता है, धीमे विष की तरह। हम पसीने की कमाई खर्च करके विष खरीदते हैं। यही हाल सिनेमा का हो गया है।

आज हमारी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ गंभीरता से दूर होने लगीं। न अच्छा देखते हैं, न अच्छा सुनते हैं, अच्छा खाते भी नहीं। अनावश्यक सामग्री ने हमें चारों ओर से घेर रखा है। हमारा ज्ञान इस आवरण को तोड़ ही नहीं पाता। क्या ज्ञान और शिक्षा की यही परिभाषा है? यह ऐसा कारण है कि हमें जीवन की दिशा का भान ही नहीं हो पाता है। हम जीवन का उद्देश्य ही तय नहीं कर पाते। इसके बिना मार्ग कहाँ तय होगा?

लेकिन, इतना तो हम आज ही तय कर सकते हैं कि हम अनावश्यक कुछ नहीं करेंगे। अनावश्यक सुनेंगे नहीं, देखेंगे नहीं, खाएँगे नहीं, छूने और सूँघने से भी दूर रहेंगे। समय को रचनात्मक रूप में ही काम लेंगे। समय लौट कर नहीं आता। समय ही तो जीवन है। इसको दूसरों की मर्जी पर छोड़ा भी नहीं जा सकता। किसी को यह अधिकार नहीं है कि मेरे जीवन का हिस्सा बेकार कर दे।

तो आओ, संकल्प करें, जीवन को सार्थकता देंगे। ऊँचे सपने देखेंगे जवानी फिर लौटकर नहीं आएगी। जीवन को ऊँचाइयाँ देने का यही समय है। कई असुर शक्तियाँ हमारे मार्ग में आएँगी। हमें उनसे लड़ते हुए आगे बढ़ना है। उनके मायाजाल में फँसना नहीं है। यह तो हार होगी। इस उम्र में हार कैसे स्वीकार हो सकती है? हमें तो कुछ कर गुजरना है जीवन को पहचान देनी है।

आज प्रबंधन के गुरु कहते हैं कि जो कुछ करो, परिणाम को ध्यान में रखकर करो। यही बात तो आपके कार्यों को और जीवन को सार्थकता देती है। परिणाम ही लक्ष्य बनता है, उसी तरह का मन में वातावरण बनाया जाता है, उसी तरह का व्यक्तित्व बन जाता है। अतः जीवन का एक लक्ष्य तो यह होना ही चाहिए—घटिया विषय से दूरी और सर्वश्रेष्ठ का चुनाव : “जो कुछ गंधी दे नहीं, तो भी वास सुवास।”

अभ्यास

1. लेखक ने यौवन को जीवन का मक्खन क्यों कहा है ?
2. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि "शिखर के बजाए तलहटी में ही जीवन कट जाएगा।"
3. "हम पसीने की कमाई खर्च करके विष खरीदते हैं।" इस पंक्ति से लेखक का क्या आशय है।
4. प्रबंधन के गुरु की बात जीवन को किस प्रकार सार्थक बनाती है ?
5. जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए ?
6. व्यक्तित्व विकास कैसे होता है ?

योग्यता विस्तार

1. उन महापुरुषों के प्रसंग संकलित कीजिए जिनके जीवन में समय का महत्व दिखायी देता है।
2. अपनी दिनचर्या की सार्थकता पर एक लेख लिखिए।
3. उन कार्यों की सूची बनाइए जिन्हें आप निर्धारित समय—सीमा में करते हैं।
4. समय के महत्व से संबंधित कविताओं, कहानियों का संकलन कीजिए। उन्हें बाल सभा में सुनाइए।
